

शुल्क १५ वर्ष
२१००/- रुपये

विज्ञप्ति

एक प्रति ८/- रुपये
वार्षिक २५०/- रुपये

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष १८ : अंक १६ : नई दिल्ली : १२-१८ अगस्त २०१२

परम पावन आचार्यश्री महाश्रमण आदि श्रमण ५२ तथा महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी आदि श्रमणी ६२, सर्व १४४ जसोल में सानंद चातुर्मासिक प्रवास कर रहे हैं। धर्म प्रभावना उत्तरोत्तर विकासोन्मुख है। जसोल एवं आसपास के क्षेत्रों में छोटी-बड़ी तपस्याओं का अच्छा क्रम चल रहा है। श्रद्धालुओं के आवागमन का क्रम निरन्तर जारी है। आगामी २५ अगस्त को विकास महोत्सव एवं २६ अगस्त को आचार्य भिक्षु चरमोत्सव के कार्यक्रम आयोज्य हैं।

समझो पापों को-६

आचार्य महाश्रमण

आर्हत वाङ्मय में कहा गया है--'उवसमेण हणे कोहं'--उपशम के द्वारा क्रोध को जीतो। आदमी में अनेक वृत्तियां होती हैं। अच्छी वृत्तियां भी होती हैं और बुरी वृत्तियां भी होती हैं। उसके भीतर अहिंसा का संस्कार भी होता है और हिंसा का संस्कार भी होता है। सत्संस्कार भी होता है और असत् संस्कार भी होता है। अनादिकाल से राग-द्वेष के संस्कार हैं, इसलिए आदमी कई बार गुस्से में भी आ जाता है, कभी अहंकार में भी आ जाता है। कभी माया में तो कभी लोभ में आ जाता है और पाप का बंध कर लेता है। अठारह पापों में छठा पाप है--क्रोध। आदमी अपने भीतर झांके और देखे तो ज्ञात होगा कि मुझे गुस्सा आ जाता है। पारिवारिक जीवन में गुस्सा आ जाता है और सामाजिक जीवन में भी गुस्सा आ जाता है। गुस्सा करने वाला व्यक्ति दूसरों को भी कष्ट में डाल देता है और स्वयं भी उससे संतप्त हो जाता है। कई बार गुस्सा करने वाला स्वयं बड़ा दुःखी होता है कि मैंने गुस्सा क्यों किया? उसे पश्चात्ताप भी होता है। गलत कार्य के लिए पश्चात्ताप या अनुताप होना अच्छी बात है। कम से कम अपने द्वारा किए गए गलत कार्य की अनुभूति तो हो जाती है।

क्रोध करना, गालियां देना कोई बड़ी बात नहीं है। बड़ी बात है सहन करना। वाणी का विवेक और संयम रखना अच्छी बात है। विवेक और संयम नहीं है तो अनियंत्रण की स्थिति में आदमी कभी भी कुछ भी कह देता है, कर लेता है। तेज गुस्से की हालत में आदमी विस्फोटक स्थिति में पहुंच जाता है। मैं कहा करता हूं कि संत वह होता है, जो शान्त होता है। जो शान्त नहीं रहता, आवेश की स्थिति में रहता है, दुष्प्रवृत्तियों में रहता है, वह या तो संत नहीं है या उसकी साधुता की साधना में अभी कमी है। संतता की तो बात ही छोड़ें, गुस्से की स्थिति में आदमी आदमी भी भला कहां रह जाता है? जैसे शराब का नशा होता है, वैसे ही गुस्सा भी एक प्रकार का नशा है। गुस्से का नशा भी आदमी को छोड़ना चाहिए। शराब पीकर आदमी उन्मत्त हो जाता है तो गुस्से में आदमी उपद्रवी बन जाता है। परमपूज्य गुरुदेव तुलसी ने अपने गीत में कहा--

छोड़ो क्यूं कोनी क्रोध रो नशो ।

थांरी आख्यां में लोही रो उफाण

छोड़ो क्यूं कोनी क्रोध रो नशो ।।

थांरी अकबक बकणै री पड़गी बाण दूजा नै कालै नाग ज्यूं डसो ।

क्रोध बड़ो दुर्गुण दुनिया में, घट-घट में बसनारो,

जिण घट में नहीं क्रोध निवासी, बो नर जगत सितारो ।।

परमपूज्य गुरुदेव महाप्रज्ञजी प्रेक्षाध्यान का प्रयोग कराते। प्रेक्षाध्यान में गुस्से पर नियंत्रण रखने के लिए ज्योतिकेन्द्र प्रेक्षा का प्रयोग निर्दिष्ट किया गया है। प्रयोग के द्वारा आदमी गुस्से पर नियंत्रण करने का प्रयास करे। गुस्सा शान्त है तो कितनी शान्ति रहती है। हम चिन्तन करें। चिन्तन से भी परिवर्तन ला सकते हैं। जो काम प्रेम से और शान्ति से हो सकता है, उसके लिए हमें गुस्सा क्यों करना चाहिए? गुस्सा नहीं करना भी एक साधना है। परमपूज्य गुरुदेव महाप्रज्ञजी का स्वभाव कितना शान्त था। हम लोग भी प्रयास कर सकते हैं कि गुस्सा करके अशान्ति की स्थिति में न जाएं। हम विनय सीखें। अहंकार एक दुर्गुण है। यह हमारी वृत्तियों पर नकारात्मक असर डालता है और मान-प्रतिष्ठा में भी कमी ला देता है। झुकना सजीव आदमी का लक्षण है, जबकि अकड़न मुर्दे की खास पहचान है। हमारा झुकना सामने वाले को भी झुका सकता है, जबकि कड़ाई या कठोरता सामने वाले को भी कठोर बना सकती है। कहा गया है--

**तुम आओ डग एक तो हम आएंगे डग अटूट।
तुम हमसे करड़े रहो तो हम हैं करड़े लटूट।।**

परमपूज्य कालूगणी फरमाते थे कि दो आदमी रस्सी के दोनों सिरे को पकड़ कर अपनी ओर खींच रहे हैं। रस्सी बीच में टूट गई तो दोनों गिर सकते हैं। दोनों में से एक छोर वाले ने रस्सी को ढीला छोड़ दिया तो वह तो ज्यों का त्यों खड़ा रहेगा, किन्तु दूसरी ओर रस्सी को पूरी ताकत से खींच रहा आदमी गिर सकता है, उसे चोट लग सकती है। अगर दोनों ही व्यक्ति रस्सी को ढीला छोड़ दें तो दोनों ही सुरक्षित खड़े रहेंगे, उनका कुछ भी नहीं बिगड़ेगा। अनावश्यक किसी बात को खींचना नहीं चाहिए। जहां तक हो सके, अहिंसक तरीके से काम करने का प्रयास होना चाहिए।

अगर गुस्सा आए तो और कुछ नहीं, इतना-सा मानसिक संकल्प कर लें कि अभी मैं कुछ देर तक नहीं बोलूंगा। संभव है कुछ समय निकल जाने के बाद गुस्से को प्रकट होने का, कार्य रूप में परिणत होने का, व्यवहार में आने का अवसर ही न मिले। कई बार विवाद की स्थिति में आदमी बोलता तो नहीं है, किन्तु बिना बोले भी बहुत कुछ कर लेता है। कुछ लोग गुस्से में आकर बहुत ज्यादा बोल जाते हैं और कुछ लोग लंबे समय तक बोलचाल बंद कर देते हैं। जैसे बहुत ज्यादा बोलना गलत है, वैसे ही बिल्कुल न बोलना भी गलत है। आवेश के कारण किसी बात को पकड़ कर बैठ जाना, बोलना बंद कर देना अच्छी बात नहीं है।

एक गांव में एक जाट और उसकी पत्नी रहते थे। जाट और जाटणी में कभी-कभी विवाद की स्थिति आ जाती। एक बार किसी बात को लेकर दोनों में इतना मतभेद बढ़ा कि दोनों ने एक दूसरे से बोलना बंद कर दिया। परिवार के दो ही जिम्मेदार सदस्य और दोनों में बोलचाल बंद, समझा जा सकता है कि दोनों को कितनी परेशानी उठानी पड़ी होगी। खेत में लावणी का समय आया। जाटणी ने देखा, गांव के सभी किसान अपने हल-बैल लेकर खेतों की ओर जा रहे हैं और उसका पति बेपरवाह बना घर में बैठा है। जाटणी के लिए यह स्थिति असह्य हो गई। चाहते थे दोनों बोलना, लेकिन अहं आड़े आ रहा था। आखिर जाटणी से रहा नहीं गया। सीधा तो वह पति से बोल नहीं सकती थी। इसलिए दीवार की ओर मुंह करके बोली--'लोग चाल्या लावणी, लोग क्यूं नी जाय।' अर्थात् सभी लोग तो लावणी के लिए जा रहे हैं, तुम क्यों नहीं जाते?'

पत्नी की ओर से सवाल हुआ तो पति जवाब दिए बिना कैसे रहता? उसने भी दीवार की ओर मुंह करके कहा--'लोग चाल्या खाय-पी, लोग किनै खाय?' अर्थात् लोग तो खा-पीकर, यानी पेट भरकर खेतों में जा रहे हैं, मैं भूखा कैसे जाऊं?' जाटणी लंबे समय से बोलचाल बंद होने से त्रस्त थी। बोलने के लिए उसे किसी बहाने की तलाश थी। आज अच्छा मौका मिला था। पति के मार्मिक उत्तर से उसका मन पिघल गया, लेकिन अहं की दीवार अब भी टूटी नहीं थी। उसने पुनः पति की ओर देखे बिना कहा--'छींकै पड़ी

राबड़ी उतार क्यों नी ले'—छींके पर रोटी, राबड़ी रखी है, उतार कर खा क्यों नहीं लेते।' पत्नी की इस बात पर जाट को हंसी आ गई। वह पत्नी की ओर घूमा और बोला--'अबै आपां बोल्या-चाल्या घाल क्यों नी दे।' अब तो हम दोनों बोल पड़े हैं, उतार कर परोस क्यों नहीं देती?'

गुस्से की स्थिति में दोनों ही स्थितियां आ सकती हैं। ज्यादा बोलना भी पड़ सकता है और लंबे समय तक बोलचाल बंद भी हो सकती है। दोनों बातें ठीक नहीं, क्योंकि इनमें 'अति' है। अति किसी भी स्थिति में उपादेय नहीं होती। मध्यम स्थिति यह है कि गुस्से की हालत में तत्काल न बोलकर दिमाग के ठंडा होने की प्रतीक्षा की जाए और उसके बाद आवेश को नियंत्रित करके बोला जाए।

व्यक्ति यह ध्यान दे कि परिवार में शान्ति है या नहीं? पारिवारिक सदस्यों में परस्पर का व्यवहार कैसा है? सास-बहू, भाई-भाई, पिता-पुत्र का आपसी व्यवहार कैसा है? व्यवहार में शालीनता, निरहंकारिता, विनम्रता, मृदुता आदि है तो घर-परिवार में शान्ति रहेगी, सदस्यों में चित्तसमाधि रहेगी, अन्यथा तनाव की स्थिति बन सकती है।

परिवार में पिता और पुत्र के बीच गहरा स्नेह और सम्मान का भाव था। दोनों एक ही थाली में खाना खाते। एक दिन पिता ने पुत्र को किसी बात पर कड़ाई से डांट दिया। पिता का यह व्यवहार पुत्र को मर्माहत कर गया। उसके मन में अन्यथा भाव आया और उसने मन में सोच लिया कि अब मैं पिता के साथ कभी भोजन नहीं करूंगा। शाम को भोजन का समय हुआ। पिता भोजन के लिए तैयार होकर बेटे की प्रतीक्षा कर रहा है। तभी उसे बताया गया कि बेटा आपसे नाराज है और वह आपके साथ भोजन नहीं करना चाहता। पिता सहिष्णु और विवेकी था। वह अपने स्थान से उठा और अपने कमरे में अलग थाली लेकर बैठे पुत्र के पास गया। स्नेह से उसके सिर पर हाथ फेरा और कहा--'कोई बात नहीं बेटे, हमेशा तुम मेरे साथ भोजन किया करते थे, आज से मैं तुम्हारे साथ भोजन करूंगा।' पुत्र अपने पिता के इस वात्सल्यपूरित व्यवहार से आर्द्र हो गया। उसने रुंधे गले से कहा--'पिताजी, आप मना भी करेंगे तो भी मैं आपके साथ ही खाऊंगा।' बड़ों का अपना कर्तव्य होता है, छोटों का अपना कर्तव्य होता है। दुनिया में कर्तव्यनिष्ठा का अपना महत्त्व होता है।

आचार्य ऋषिरायजी हमारे धर्मसंघ के तीसरे आचार्य थे। वे अपने ढंग के विलक्षण आचार्य थे। इतिहास में आता है कि एक बार किसी साध्वी को उसकी गलती पर उन्होंने उपालंभ देते समय कोई ऐसा शब्द कह दिया, जो उसके मन को ठेस पहुंचा गया। वह आक्रोश से भर गई। अन्य साध्वियों को भी उसने उभारा। फलतः चौदह साध्वियों ने संघ से पृथक होने का निर्णय कर लिया। आचार्य ऋषिराय को जब उस स्थिति का पता चला तो वे बहुत चिन्तित हुए। वे नहीं चाहते थे कि उनके किसी कथन के मूलभाव को समझे बिना या अन्यथा समझने के कारण संघ के किसी सदस्य के मन में विक्षोभ उत्पन्न हो। उन्होंने बिगड़ने के किनारे तक पहुंची उस स्थिति को संभालने के लिए अपने रुख को एकदम मोड़ दे दिया। मुनि स्वरूपचन्द्रजी को लेकर वे तत्काल साध्वियों के स्थान पर पधारे और उन सबसे बातचीत करके उनके रोष को शान्त कर दिया।

गुरुदेव तुलसी फरमाते कि मुझे कितना सहन करना पड़ता है। मैं संघ का आचार्य हूं, शास्ता हूं, पर मुझे जितना सहन करना पड़ता है, उतना दूसरों को नहीं करना पड़ता। बड़ों को अपना बड़प्पन टिकाए रखने के लिए कई बार सुनना पड़ता है, कई बार बहुत सहना पड़ता है, बहुत गम खाना पड़ता है और कई बार झुकना पड़ता है। आदमी अपने आक्रोश की वृत्ति पर नियंत्रण करके क्षमा भाव को पुष्ट करने का, उसे बढ़ाने का प्रयास करे। संस्कृत साहित्य में कहा गया है--'क्षमा वीरस्य भूषणम्। क्षमा शूरवीर आदमी का भूषण है। किसी को क्षमा करना कमजोरी नहीं, अपितु शक्तिशाली और सक्षम होने का परिचायक है। राष्ट्रकवि दिनकर ने अपने काव्य 'कुरुक्षेत्र' में कहा है--

**क्षमा शोभती उस भुजंग को जिसके पास गरल हो,
उसको क्या जो दन्तहीन विषहीन विनीत सरल हो ।**

दंतहीन और विषहीन सर्प शान्त रहे और किसी को दंशित न करे तो यह कोई बड़ी बात नहीं, लेकिन भयंकर विषदंतवाला, जहर से परिपूर्ण नागराज छेड़ने पर भी शान्त रहे, अपना क्रोध प्रदर्शित न करे तो यह बड़ी बात है। उसकी क्षमा प्रशंस्य है। आदमी उपशम के द्वारा क्रोध को शान्त करने का प्रयास करे।'

परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण जसोल में

भाषा के अनपेक्षित प्रयोग से बचें

३१ जुलाई। प्रातःकालीन कार्यक्रम में परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'साधु जीवन में भाषा का विवेक होना चाहिए। भाषा का प्रयोग कहां करना, कहां नहीं करना भाषा विवेक है। साधु इस संदर्भ में यह विवेक रखता है कि कहां बोलूं, कहां न बोलूं। भाषा के अनपेक्षित प्रयोग से बचना चाहिए। यह भी ध्यान में रहे कि जहां बोलना अपेक्षित है, वहां अवश्य बोलें। प्रतिक्रमण व अर्हत् वंदना करें तो उच्चारणपूर्वक करें। स्वाध्याय करें, पर सस्वर करें और उसमें भी उच्चारण स्पष्ट हो। साधु-साधवियों अपनी चर्चा के प्रति सजग रहें। साधु गोचरी आदि से लौटने के बाद चउवीसत्थव अवश्य करें। जहां बोलने की अपेक्षा नहीं है, वहां अनावश्यक भाषा के प्रयोग से बचें, वाणी संयम का अभ्यास करें।'

हाजरी का वाचन करते हुए परमपूज्य आचार्यप्रवर ने इसकी विभिन्न धाराओं का विवेचन किया। समदड़ी, पारलू व पचपदरा में दीक्षित छह साधवियों ने एक साथ लेखपत्र का समुच्चारण किया। आचार्यवर ने अनुग्रहवृष्टि करते हुए छहों साधवियों को ग्यारह-ग्यारह कल्याणक बक्शीश किए। हाजरी के बाद साधुओं ने पंक्तिबद्ध तथा साधवियों ने अपने स्थान पर खड़े होकर लेखपत्र का उच्चारण किया। कार्यक्रम के प्रारंभ में कन्यामंडल जसोल ने चौबीसी के अंतर्गत कुंथु जिनस्तवन का संगान किया।

परम प्राप्ति में बाधक है अहंकार

१ अगस्त। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने प्रातःकालीन मंगल प्रवचन में कहा--'दस प्रकार के श्रमण धर्मों में चौथा है--मार्दव। यह अहंकार का विलोम शब्द है। व्यक्ति दुर्बलतावश अहंकार में चला जाता है। संस्कृत में अभिमान को मद्यपान के समान बताया गया है, जो व्यक्ति को उन्मत्त बना देता है। अहंकार परम की प्राप्ति में बाधक तत्त्व है। ज्ञान के साथ विनम्रता का विकास भी अपेक्षित होता है। मार्दव के द्वारा अहंकार पर विजय पाई जा सकती है।'

अहंकार के कारणों का विवेचन करते हुए आचार्यवर ने कहा--'व्यक्ति जाति, कुल, बल, ऐश्वर्य आदि अनेक कारणों से अहंकार में चला जाता है। अहंकारी व्यक्ति दूसरों के अधीन नहीं रहना चाहता, अपितु वह दूसरों को अपने अधीन रखना चाहता है। किसी विशिष्ट पद पर प्रतिष्ठित होने पर भी विनम्र रहना विशेष बात होती है। जिस व्यक्ति के भीतर नम्रता, क्षमाशीलता, आदर भाव आदि गुण होते हैं, वह बड़ा व्यक्ति है। जिसमें विनम्रता है, उसमें अनेक गुण स्वतः समाहित हो सकते हैं।'

अपने प्रवचन के पश्चात आचार्यवर ने सरस शैली में 'डालिम चरित्र' आख्यान का वाचन किया। कार्यक्रम में मंत्री मुनिश्री का भी प्रेरक वक्तव्य हुआ। तेरापंथ कन्यामंडल जसोल ने चौबीसी के मल्लिनाथ जिन स्तवन का संगान किया। श्री बाबूलाल डेलडिया ने भावाभिव्यक्ति के साथ अपनी तपस्या के ६६वें दिन पूज्यवर से १०८ दिन की तपस्या का प्रत्याख्यान किया। सुश्री कविता बागरेचा ने गीत का संगान किया। मुमुक्षु प्रांजल (बालोतरा) ने पूज्यवर से अपनी दीक्षा तिथि घोषित करने की प्रार्थना की। आचार्यवर ने अत्यन्त अनुग्रह कर मुमुक्षु प्रांजल को सिवांची मालाणी की यात्रा के दौरान दीक्षा प्रदान करने की घोषणा की।

उल्लास का पर्व रक्षाबन्धन

२ अगस्त । श्रावण शुक्ला पूर्णिमा । रक्षाबन्धन का पावन पर्व । परमपूज्य आचार्यप्रवर ने प्रातःकालीन प्रवचन के दौरान अपने पावन प्रवचन में कहा--‘श्रावणी पूर्णिमा के दिन रक्षाबन्धन का त्यौहार मनाया जाता है। जीवन में रक्षा का बड़ा महत्त्व होता है। सामान्यतः हर प्राणी अपनी सुरक्षा चाहता है, क्योंकि उसमें जिजीविषा होती है। रक्षाबन्धन पर्व भाई-बहन के संबंध के साथ जुड़ा हुआ है। यह उनके संबंध को मजबूत बनाता है। एक बहन जब अपने भाई के हाथ में रक्षासूत्र बांधती है तो वह क्षण कितने उल्लास का होता है। इसके द्वारा बहन अपने भाई को बोध कराती है कि मेरी रक्षा का दायित्व तुम पर है। बहन की रक्षा के लिए कभी-कभी स्वयं को खतरे में भी डालना पड़ सकता है। विचारणीय बात यह है कि भाई अपनी बहन की रक्षा के दायित्व की अनुभूति कितने अंशों में करता है।’ संस्कृति को बहन से उपमित करते हुए आचार्यवर ने कहा--‘अपनी संस्कृति की सुरक्षा करना व्यक्ति का कर्तव्य होता है। हम मर्यादित रहकर इस बहन की सुरक्षा कर सकते हैं।’

आज ‘संस्कृत दिवस’ होने का उल्लेख करते हुए आचार्यवर ने कहा--‘आज का दिन संस्कृत भाषा के महत्त्व को उजागर करता है। भारतीय विद्याओं की दृष्टि से यह एक महत्त्वपूर्ण भाषा है। इस भाषा में ज्ञान का विशाल भंडार है। विपुल प्राचीन साहित्य संस्कृत भाषा में गुंफित है। भारतीय संस्कृति को समझने में संस्कृत भाषा का अध्ययन सहायक सिद्ध हो सकता है।’ प्रवचन के पश्चात परमपूज्य आचार्यप्रवर ने ‘डालिम चरित्र’ आख्यान का वाचन किया।

कार्यक्रम में मंत्री मुनिश्री ने अपने प्रेरक उद्बोधन में रक्षाबन्धन को सुरक्षित रखने वाला त्यौहार बताया। तेरापंथ कन्यामंडल जसोल ने चौबीसी संगान के अन्तर्गत भगवान मुनिसुव्रत स्तुति गीत का संगान किया। मुनि विजयकुमारजी ने रक्षाबंधन के संदर्भ में गीत का संगान किया। पारमार्थिक शिक्षण संस्था में प्रवेश हेतु समुद्यत सुश्री प्रीति लोढ़ा (राजविराज-नेपाल) ने अपने श्रद्धासिक्त उद्गार व्यक्त किए।

अनुशासन से होता है विकास

३ अगस्त । परम पावन आचार्यप्रवर ने प्रातःकालीन कार्यक्रम के अंतर्गत अपने मंगल प्रवचन में कहा ‘हमारे जीवन में अनुशासन का महत्त्वपूर्ण स्थान है। चाहे धर्मसंघ हो, विद्या संस्थान हो, पारिवारिक संगठन हो अथवा अन्य कोई संगठन हो, यदि वहां अनुशासन है तो सारे कार्य व्यवस्थित ढंग से संपादित हो सकते हैं। अनुशासन व्यक्ति के विकास का पथ प्रशस्त करता है। अनुशासित होने पर आक्रोश और उद्वेगता करने वाला व्यक्ति अपना तो अहित करता ही है, संगठन के लिए भी समस्या पैदा करने वाला बन जाता है। संगठन के मुखिया पर अनुशासन का दायित्व होता है। यदि संगठन के सदस्य उसके अनुशासन को महत्त्व नहीं देते हैं तो उस संगठन की व्यवस्था लड़खड़ा सकती है। शिष्य प्रणत भाव से गुरु के अनुशासन को सहन करे। जो गुरु के कठोर अनुशासन को विनयभाव से सहन करता है और गुरु के इंगित के प्रति जागरूक रहता है, वह अपना विकास कर सकता है।’

पूज्यप्रवर ने आगे कहा--‘सहिष्णुता सर्वत्र अपेक्षित होती है। शिष्य का कर्तव्य है कि वह अपने गुरु के अनुशासन को बहुमान देते हुए उसे सविनय स्वीकार करे। जो विद्यार्थी अध्यापक व प्रधानाध्यापक के अनुशासन में रहते हैं, वे अपना विकास कर सकते हैं। उद्वेग विद्यार्थी अपने विकास के मार्ग पर मानों स्पीडब्रेकर लगा लेते हैं। पारिवारिक जीवन में मुखिया के अनुशासन को महत्त्व दिया जाता है तो वह परिवार गौरवशाली बन जाता है। अनुशासन के अभाव में परस्पर कलह और असामंजस्य की स्थितियां पैदा हो सकती हैं। संगठन के मुखिया का दायित्व होता है कि वह अपनी सुविधाओं को गौण कर संगठन की अपेक्षाओं को प्राथमिकता दे। भारत लोकतान्त्रिक प्रणाली वाला राष्ट्र है। लोकतंत्र में अनुशासन की ज्यादा आवश्यकता होती है, क्योंकि यह स्वयं के द्वारा स्वयं पर शासन वाली प्रणाली है। इसलिए जनता को

अनुशासन का प्रशिक्षण प्राप्त होता रहे।' अपने प्रवचन के उपरान्त आचार्यप्रवर ने 'डालिम चरित्र' आख्यान का वाचन किया।

कार्यक्रम में मंत्री मुनिश्री का प्रेरक उद्बोधन हुआ। तेरापंथ कन्यामंडल ने चौबीसी के नमि जिनस्तवन का संगान किया। मासखमण की ओर अग्रसर जसोल निवासी श्री सुरेश गांधी मेहता की चौबीस की तपस्या के उपलक्ष्य में उनके पारिवारिकजनों ने गीत का संगान किया। श्री मरुधर केसरी सेवा समिति तमिलनाडु के लगभग ३५० व्यक्तियों का संघ आज पूज्यवर की पावन सन्निधि में उपस्थित हुआ। कार्यक्रम में श्री सुरेश कोठारी ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम के पश्चात पूज्य आचार्यप्रवर ने समागत संघ के सदस्यों को पावन पाथेय प्रदान किया। कार्यक्रम में आचार्यवर ने १६ जनवरी को बालोतरा में दीक्षा समारोह करने और उसमें मुमुक्षु प्रांजल (बालोतरा) को साध्वी दीक्षा प्रदान करने की घोषणा की।

सत्संग से सद्गुणों का विकास

४ अगस्त। परम पावन आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'क्षुद्र व्यक्तियों का संसर्ग व्यक्ति के लिए हानिकारक बन सकता है। मित्र के छह लक्षण बताए गए हैं--मित्र को कोई वस्तु देना और उससे लेना। मित्र के घर भोजन करना और उसे अपने घर भोजन कराना। मित्र की गुप्त बात को जानना और अपनी गुप्त बात उसे बताना। किन्तु सबसे उत्तम बात है--अपनी आत्मा को अपना मित्र बनाना। यदि दूसरों को अपना मित्र बनाना हो तो वह कल्याणमित्र होना चाहिए, जो हित की शिक्षा देनेवाला हो, कठिनाई में सत्पथ दिखाने वाला हो। व्यक्ति को अच्छे विचारों के लिए सत्संगति का लाभ उठाना चाहिए। संत महात्माओं और सज्जन व्यक्तियों के संसर्ग से जीवन में सद्गुणों का विकास हो सकता है। कहावत है--'जैसी संगत, वैसी रंगत।' इसे ध्यान में रखते हुए व्यक्ति अधिकाधिक सत्संग में रहने का प्रयत्न करे।' पूज्यप्रवर ने प्रवचन के पश्चात सरस शैली में 'डालिम चरित्र' आख्यान का वाचन किया।

कार्यक्रम में तेरापंथ कन्या मंडल जसोल द्वारा चौबीसी के अंतर्गत अरिष्टनेमि जिनस्तवन का संगान किया गया। मंत्री मुनिश्री का प्रेरक अभिभाषण हुआ। महावीर जयंती की प्रार्थना के साथ लुधियाना से समागत संघ की ओर से श्री कमल नौलखा और सूर्यप्रकाश श्यामसुखा ने अपने उद्गार व्यक्त किए। न्यूजर्सी से समागत बालक यश जैन ने गुरु चरणों में अपने भावसुमन अर्पित किए।

आज मध्याह्न में सुमेरपुर क्षेत्र के उपखण्ड अधिकारी श्री ओ.पी. बिश्नोई ने आचार्यप्रवर के दर्शन किए और विविध विषयों पर पूज्यप्रवर से मार्गदर्शन प्राप्त किया।

निर्मलता व हितैषिता रहे मित्रता में

५ अगस्त। प्रातःकालीन कार्यक्रम में मंत्री मुनिश्री ने अपने अभिभाषण में कहा--'हमारा जीवन पारस्परिक सहयोग पर अवलंबित है। आपसी व्यवहार मैत्रीपूर्ण होना चाहिए। मैत्री के लिए व्यवहार में मधुरता एवं स्पष्टता हो। धार्मिक व्यक्ति मिश्री जैसा बने। उसे चूर्ण आदि किसी भी रूप में खाएं, उससे मिठास प्राप्त होती है। मित्र भी उसे बनाना चाहिए, जो सुख-दुःख में साथ दे सके। जिसके साथ रहने से धर्म पर आंच न आए व संस्कृति को क्षति न पहुंचे।'।

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'दूसरों के प्रति द्वेषभाव नहीं रखना मैत्री भावना है। जैन साधना पद्धति में अनुप्रेक्षा/भावना निर्दिष्ट है। ये बारह व सोलह, दोनों रूपों में हैं। मैत्री भावना तेरहवीं अनुप्रेक्षा है। व्यक्ति यह चिंतन करे कि जहां तक संभव हो सके, मेरे से किसी का हित हो। हित करने के बाद उसे भूल जाऊं, उसका कहीं उल्लेख न करूं। यह सदैव याद रखें कि दूसरों का हित करनेवाला स्वयं का हित करता है और दूसरों का अहित करनेवाला स्वयं का अहित करता है। किसी को विकास व साधना के क्षेत्र में आगे बढ़ाना कितना हितकर होता है। पूज्य गुरुदेव तुलसी ने कितनों को साध्वी

व मुनि दीक्षा प्रदान की, प्रगति के पथ पर आगे बढ़ाया। पूज्य गुरुदेव महाप्रज्ञजी ने कितनों को प्रेक्षाध्यान का प्रयोग करवाया, प्रवचन व वार्तालाप के माध्यम से प्रेरणा प्रदान की।’

‘फ्रेंडशिप डे’ की चर्चा करते हुए आचार्यवर ने कहा--‘व्यावहारिक जगत में मित्र बनाने की विधा चलती है। इससे कुछ सहायता मिल जाती है। एक दूसरे के सहयोग से ही काम चलता है। निरपेक्ष रहकर जीवन चलाना बहुत कठिन है। कोई किसी को अपना मित्र बनाए या न बनाए, यह उसकी अपनी इच्छा है। यदि कोई मित्र बनाता है तो वह अपने मित्र के साथ ईर्ष्या-द्वेष व छलना का व्यवहार न करे, उसे धोखा न दे। छलना से आन्तरिक मैत्री का टिक पाना कठिन होता है। जब प्रेम व मैत्री का धागा टूट जाता है तो संबंध बिखर जाते हैं। मित्र अपने मित्र की समस्या का समाधान करता है। मित्रता में निर्मलता रहे, हितैषिता रहे। विराट मैत्री अहिंसा की भावना से भावित होती है। पवित्र मैत्री से ओतप्रोत चित्त रहे तो अध्यात्म प्रखर बन जाता है।’ कार्यक्रम में पूज्य आचार्यप्रवर ने **श्री तोलारामजी श्यामसुखा (गंगाशहर)** को पुराने श्रावक, सेवा करनेवाले तथा तत्त्वज्ञान के जानकार बताते हुए उन्हें **‘श्रद्धानिष्ठ श्रावक’** संबोधन से संबोधित किया।

जैन विश्वभारती के कुलपति, सेवाभावी कल्याण केन्द्र, लाडनू के निवर्तमान चीफ ट्रस्टी शासनसेवी श्री झूमरमलजी बैंगानी (बीदासर) का पिछले दिनों मुम्बई में निधन हो गया। उनके परिजन आध्यात्मिक संबल प्राप्त करने हेतु श्रीचरणों में उपस्थित हुए। श्रीमती पुष्पा बैंगानी ने स्व.झूमरमलजी के संबंध में अपने उद्गार व्यक्त किए। मंत्री मुनिश्री ने झूमरमलजी को संघ हितचिंतक श्रावक, कार्यकर्ता एवं श्रावक चिकित्सक बताया। शासनश्री साध्वी कमलश्रीजी ने उनसे जुड़े संस्मरण सुनाए।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने श्री बैंगानीजी के संदर्भ में कहा--‘शासनसेवी झूमरमलजी बैंगानी धर्मसंघ के एक महत्त्वपूर्ण व्यक्ति थे। वे महत्त्वपूर्ण इसलिए थे कि उन्होंने आचार्यों एवं साधु-साध्वियों की चिकित्सा संबंधी बहुत सेवा की। आयुर्वेद के वे जानकार थे। पूज्य गुरुदेव महाप्रज्ञजी के तो वे खास थे। गुरुदेव के मुखारविन्द से झूमर-झूमर निकला करता। गुरुदेव आयुर्वेदिक दवा के संदर्भ में उनके परामर्श को महत्त्व देते। मुझे भी दवा का परामर्श देते और दवा बहराते भी थे। सरदारशहर चतुर्मास में वे कई बार आए। वे स्वास्थ्य संबंधी जानकारी लेते और अपेक्षित बात बताते। गुरुदेव तुलसी के समय में भी वे आयुर्वेदिक दवा संबंधी अपना परामर्श दिया करते थे। जैन विश्वभारती की उन्होंने वर्षों तक अनेक रूपों में सेवा की।

आचार्यवर ने आगे कहा--‘झूमरमलजी बीदासर के मान्य श्रावक थे। ऐसे श्रावक के देहावसान से एक प्रकार की क्षति हुई है। सरदारशहर में वे मेरे पास आए। एकान्त में सेवा कर उन्होंने अपने जीवन की आलोचना की। मैंने उनको प्रायश्चित्त दिया। जैसा मैंने देखा, वे सौम्य स्वभावी श्रावक थे। दूसरों की चिकित्सा करते-करते एक दिन स्वयं बीमार हो गए। यह एक नियति है। झूमरमलजी बैंगानी के भाई जंवरीमलजी कोलकाता में रहते हैं। वे अच्छी सेवा करने वाले श्रावक हैं। दोनों भाइयों की जोड़ी थी। गुरुदेव दोनों को झूमर-जंवरी फरमाते थे। उनके दोनों पुत्र रणजीतजी और लक्ष्मीपतजी व अन्य सदस्य इसी तरह संघ की सेवा करते रहें।’ कार्यक्रम का संचालन मुनि हिमांशुकुमारजी ने किया।

आचार्यप्रवर ने आज चातुर्मास समाप्ति के बाद मर्यादा माहेत्सव स्थल टापरा तक के विहार कार्यक्रम की घोषणा की। इस अवधि में २३ जनवरी २०१३ को असाढ़ा में दीक्षा महोत्सव की घोषणा की। इससे पूर्व १६ जनवरी २०१३ को बालोतरा व १५ फरवरी को टापरा में दीक्षा महोत्सव की घोषणा कुछ दिन पूर्व आचार्यवर कर चुके हैं।

महाप्रज्ञ सेवा प्रकल्प एवं गुलाब कौशलया चेरिटेबल ट्रस्ट, जयपुर द्वारा आयोजित पंचदिवसीय निःशुल्क विकलांग सहायता शिविर का आज समापन हुआ। आठ से पैंसठ वर्ष की अवस्था वाले विकलांग भाई-बहन जसोल व उसके पार्श्ववर्ती डेढ़ सौ किमी. दूर तक से आए। उनको ट्रस्ट द्वारा जयपुर फुट व केलिपर लगाए गए। इस आशय की अवगति प्रकल्प के अध्यक्ष शासनसेवी श्री नरेश मेहता ने आचार्यवर की सन्निधि

में आयोजित कार्यक्रम में देते हुए कहा--‘जसोल व जयपुर में ३६० कृत्रिम जयपुर पांव व केलिपर लगाए गए। इस संदर्भ में चातुर्मास व्यवस्था समिति के संयोजक श्री गौतम सालेचा, स्थानीय तेयुप अध्यक्ष श्री रमेश भंसाली एवं मंत्री श्री जितेन्द्र सालेचा ने अपने विचार रखे।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने कहा--‘जयपुर प्रवास के दौरान आचार्य महाप्रज्ञ ने हमें पदमपुरा स्थित नरेशजी के आई हास्पिटल भेजा। वहां हम एक दिन-रात रहे। पिछले कई वर्षों से ये इस लौकिक सेवा कार्य में संलग्न हैं। आध्यात्मिक दृष्टि से ये यदा-कदा दर्शन करते रहते हैं।’ आचार्यवर ने पंडाल में उपस्थित रोगियों को नशामुक्ति का संकल्प करवाया।

तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम एवं सुराणा हास्पिटल एवं रिसर्च सेंटर मुम्बई के तत्त्वावधान में दोदिवसीय विशाल निःशुल्क चिकित्सा शिविर का आयोजन पारस भवन में हुआ। शिविर में सुप्रसिद्ध डॉक्टरों के दल ने हृदयरोग, हड्डी, नेत्र, पाइल्स, दन्त व जनरल १५०० रोगियों की निःशुल्क परीक्षण कर दवा वितरित की गई। शिविर में समागत डॉक्टरों ने आचार्यवर के दर्शन किए। यह जानकारी शिविर संयोजक श्री डूंगरचन्द सालेचा ने दी।

आज जेसीज क्लब के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री हरिदर्शन सीलीके, राजस्थान जोन के अध्यक्ष श्री गौरव माहेश्वरी एवं उपाध्यक्ष श्री रतन माहेश्वरी ने आचार्यवर के दर्शन किए तथा समसामयिक विषयों पर चर्चा की।

अच्छे प्रशिक्षण के द्वारा तैयार हों योग्य अध्यापक

६ अगस्त। प्रातःकालीन कार्यक्रम में मंत्री मुनिश्री ने अपने प्रेरक अभिभाषण में कहा--‘विकास सबको प्रिय है। विकास के रूप अलग हो सकते हैं। जिस उपाय से हमारी आन्तरिक शक्ति जागृत होती हो, उसे अपनाएं। हमारे भीतर शक्ति के स्रोत हैं। उन्हें सक्रिय किया जाए और मानसिक संकल्प को दृढ़ किया जाए तो व्यक्ति ध्यान की अतल गहराई में पहुंच सकता है।’

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल उद्बोधन में कहा--‘इस दृश्य जगत में सब कुछ स्थायी नहीं है। द्रव्य आत्मा स्थायी है। यह कभी अनात्मा नहीं हो सकती। आत्मा को कभी छेदा व काटा नहीं जा सकता। हमारा जीवन स्थायी नहीं है। यह परिवर्तनशील है। शरीर से आत्मा का विलग होना मृत्यु है और सदा-सर्वदा के लिए शरीर को छोड़ना मोक्ष है। वस्तुतः जीवन अध्रुव है, अशाश्वत है।’

आज से प्रारंभ हो रहे जीवनविज्ञान शिक्षक प्रशिक्षण शिविर के संदर्भ में आचार्यवर ने कहा--‘आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ ने जीवन विज्ञान कार्यक्रम प्रस्तुत किया। जीवन विज्ञान मुख्यतः शिक्षा जगत के लिए है। इसका मुख्य लक्ष्य है स्वस्थ व्यक्ति, स्वस्थ समाज व स्वस्थ राष्ट्र का निर्माण करना। जीवन में अगर संयम का अवतरण हो जाए तो व्यक्ति, समाज और राष्ट्र का सुधार हो सकेगा। जीवन विज्ञान ऐसा पथ आलोकित करता है, जिससे ज्ञान का विकास हो, एकाग्रता का विकास हो, भावात्मक विकास हो और अपने आवेगों पर संतुलन रख सकें। सभी निष्ठा के साथ इस अभियान में सहयोग दें तो यह राष्ट्रव्यापी बन सकता है। शिक्षा जगत में इसका अच्छा उपयोग हो, किन्तु इसके लिए योग्य प्रशिक्षकों का होना जरूरी है। अच्छे प्रशिक्षण के द्वारा योग्य प्रशिक्षक तैयार हों, यह अपेक्षित है।’ प्रवचन के पश्चात पूज्य आचार्यवर ने ‘डालिम चरित्र’ आख्यान का वाचन किया।

श्रीमती शान्तिदेवी भंवरलाल गोलेच्छा ने आज तीस की तपस्या का पूज्यप्रवर से प्रत्याख्यान किया। सिद्धि तप, चार वर्षीतप एवं अन्य तपस्या करने वाली तपस्विनी बहन के तप की अनुमोदना में परिजनों ने गीत प्रस्तुत किया। सुश्री शैजल बाघमार ने उनका परिचय प्रस्तुत किया। विरार (महाराष्ट्र) से समागत संघ की ओर से प्रेक्षा प्रशिक्षक श्री मदन फूलफगर, श्री तेजराज हिरण, श्री मदन धाकड़ ने गीत का संगान किया।

प्रशस्त हो व्यक्ति का चिंतन

७ अगस्त। प्रातःकालीन कार्यक्रम में मंत्री मुनिश्री ने अपने प्रेरक वक्तव्य में कहा--‘जीवन अनेक दुर्बलताओं का समवाय है। दुर्बलताओं को छोड़ने से ही आन्तरिक शक्तियों का जागरण होता है। परिवर्तन लाने के लिए संकल्प व त्याग की चेतना जागे। जिस व्यक्ति की संकल्प शक्ति मजबूत है, वह भगवत्ता को प्राप्त कर लेता है।’

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--‘धर्म की साधना के लिए मुख्य साधन शरीर है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में शरीर का बड़ा महत्त्व है। शरीर सक्षम है तो हम सब कुछ कर सकते हैं। शारीरिक विकास के लिए भोजन आवश्यक है, किन्तु कब, क्या और कितना खाना, इसका विवेक बहुत जरूरी है। खाद्य संयम की अपेक्षा में खाद्य विवेक को बहुत महत्त्व देता हूं। शारीरिक स्वास्थ्य में वेदनीय कर्म का बड़ा योगदान है। आहार आदि का ध्यान रखने पर भी निमित्त मिलने से असात वेदनीय कर्म उदय में आ जाता है।’ शारीरिक विकास के साथ मानसिक विकास के महत्त्व को रेखांकित करते हुए आचार्यवर ने कहा--‘जीवन में मनोबल का बहुत महत्त्व है। दृढ़ मनोबल वाला व्यक्ति छोटी-मोटी कठिनाइयों से घबराता नहीं। व्यक्ति का चिंतन प्रशस्त होना चाहिए। चिंतन करने से समस्या का समाधान हो सकता है।’

दो शब्द हैं--एकाग्र और व्यग्र। एकाग्र वह होता है, जिसका मन एक आलंबन पर टिका रहता है। जिसका मन भटकता रहता है, एक साथ भिन्न-भिन्न विषयों पर चिंतन करता है, वह व्यग्र होता है। एकाग्रता से स्मरण शक्ति का विकास होता है।’ प्रवचन के उपरान्त आचार्यप्रवर ने ‘डालिम चरित्र’ आख्यान का वाचन किया। कार्यक्रम के प्रारंभ में जसोल कन्यामंडल ने चौबीसी के अंतर्गत अन्तिम तीर्थंकर भगवान महावीर स्तवन का संगान किया। तपस्या के संदर्भ में मुनि जिनेशकुमारजी एवं मुनि पृथ्वीराजजी ने अपने विचार रखे। मुनि भव्यकुमारजी के संसारपक्षीय पिता श्री पारसमल बोधरा ने आज पूज्यवर से चालीस की तपस्या का प्रत्याख्यान किया। उनका आगे लंबी तपस्या करने का विचार है। वे पूर्व में अट्टाईस से इकतीस, उनचालीस से इकतालीस, उणचास से इक्यावन व साठ की तपस्या कर चुके हैं। लगभग सत्रह माह से निरंतर एकासन तप कर रही श्रीमती गुलाबदेवी भंसाली (असाढ़ा) ने ३१ जनवरी २०१३ तक निरंतर एकासन तप करने का प्रत्याख्यान किया।

तेरापंथ सभा प्रतिनिधि सम्मेलन : विभिन्न सत्र, विविध प्रस्तुतियां

परम पावन आचार्यप्रवर की मंगल सन्निधि में २८-३० जुलाई तक जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा द्वारा समायोजित तेरापंथी सभा प्रतिनिधि सम्मेलन सानंद और सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। इस त्रिदिवसीय सम्मेलन के दौरान पूज्यवर द्वारा प्रदत्त पाथेय न केवल संभागियों के लिए पथदर्शक है, अपितु संपूर्ण तेरापंथ समाज के लिए प्रेरणास्पद और आचरणीय है। पूज्यवर द्वारा प्रदत्त पावन पाथेय पूर्व विज्ञप्ति में प्रकाशित है। पूज्यवर की सन्निधि में चयनित सभाओं की उपलब्धियां भी प्रस्तुत की गईं। प्रथम दिन रात्रिकालीन ‘जिज्ञासा-समाधान’ नामक सत्र में पूज्यवर ने देश भर से समागत प्रतिनिधियों की जिज्ञासाओं को समाहित किया। यह सत्र अत्यन्त आकर्षक रहा।

विभिन्न सत्रों में जहां महासभा द्वारा संचालित प्रवृत्तियों को प्रस्तुति दी गई, वहीं सभाओं के साथ सीधा संवाद भी उल्लेखनीय रहा। संवाद थीम पर समायोजित इस सम्मेलन में ज्ञानशाला प्रभारी मुनि उदितकुमारजी ने ज्ञानशाला, मुनि कुमारश्रमणजी ने ‘कैसे बने श्रावक कार्यकर्ता’ एवं मुनि योगेशकुमारजी ने उपासक श्रेणी के विषय में अपने सारगर्भित विचार व्यक्त किए। महासभा प्रभारी मुनि विश्रुतकुमारजी के प्रासंगिक वक्तव्य हुए।

प्रवृत्तिगत प्रस्तुतियों के क्रम में महासभाध्यक्ष श्री हीरालाल मालू ने आचार्य तुलसी जन्मशताब्दी, प्रधान न्यासी श्री कमल दूगड़ ने आचार्य महाप्रज्ञ स्मारक स्थल और महासभा शताब्दी, महामंत्री श्री विनोद चोरड़िया

ने तेरापंथ भवन, निवर्तमान अध्यक्ष श्री चैनरूप चिंडालिया ने सभाओं का सम्यक् संचालन, उपाध्यक्ष श्री विनोद बैद ने समस्या समाधान प्रकोष्ठ, उपाध्यक्ष श्री किशन डागलिया ने सहभागिता योजना, उपाध्यक्ष श्री महेन्द्र धारीवाल ने जैन भारती, सहमंत्री श्री बजरंग सेठिया ने संविधान, उपासक श्रेणी के राष्ट्रीय संयोजक श्री डालमचन्द नौलखा ने उपासक श्रेणी, ज्ञानशाला के राष्ट्रीय संयोजक श्री सोहनराज चोपड़ा ने ज्ञानशाला, मेधावी छात्र प्रोत्साहन परियोजना के संयोजक श्री के.सी.जैन ने परियोजना के संदर्भ में विशद अवगति दी। तेरापंथ विकास परिषद के संयोजक श्री लालचन्द सिंधी ने विकास परिषद और जय तुलसी फाउण्डेशन के प्रधान न्यासी श्री सुरेन्द्र दूगड़ ने फाउण्डेशन के विषय में जानकारी दी। विभिन्न सत्रों में उपाध्यक्ष श्री विमल सुराणा, उपाध्यक्ष श्री सुकनराज परमार, श्री सुशील चोरड़िया एवं श्री विमल बैद द्वारा संचालन और आभर ज्ञापन किया गया।

संवाद सभाओं का महासभा के साथ सत्र के अंतर्गत २४ सभाओं द्वारा अपनी उपलब्धियों को प्रस्तुति दी गई। दूसरे दिन रात्रि में श्रेष्ठ और विशिष्ट सभा के अन्तिम चयन हेतु पूर्व चयनित ग्यारह सभाओं के साक्षात्कार का उपक्रम रहा। सम्मेलन में देश भर की २२७ सभाओं के लगभग ६०० प्रतिनिधि संभागी बने। सम्मेलन प्रभावी और बहुत सफल रहा।

जैन विद्या कार्यशाला का आयोजन

पूज्यवर की पावन सन्निधि में ४-२४ जुलाई तक तेरापंथ युवक परिषद द्वारा जैनविद्या कार्यशाला का आयोजन हुआ। कार्यशाला में मुनि उदितकुमारजी, मुनि दिनेशकुमारजी, मुनि जिनेशकुमारजी, मुनि मदनकुमारजी, मुनि कुमारश्रमणजी, मुनि हिमांशुकुमारजी, मुनि रजनीशकुमारजी, मुनि योगेशकुमारजी, मुनि पुलकितकुमारजी, मुनि कीर्तिकुमारजी, मुनि परमानंदजी, मुनि जितेन्द्रकुमारजी, मुनि अनंतकुमारजी, मुनि अभिजितकुमारजी ने प्रशिक्षण दिया। इसकी परीक्षा में १६१ भाई-बहनों ने भाग लिया। इसमें प्रथम स्थान पूजा ओस्तवाल, द्वितीय स्थान संतोष वडेरा एवं मीना तातेड़ ने तथा तृतीय स्थान नेहा चोपड़ा, कविता बाफना व रणजीत बाफना ने प्राप्त किया। इसका संचालन मुनि योगेशकुमारजी व मुनि अनंतकुमारजी ने किया। कार्यशाला की सफलता के लिए तेयुप जसोल के सदस्य सक्रिय रहे।

साध्वियों में पंचरंगी तप

४ अगस्त को परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर की मंगल सन्निधि में साध्वियों ने पंचरंगी तप सानंद संपन्न किया। पंचरंगी तप करने वाली साध्वियों के नाम इस प्रकार हैं--

पंचोला (पांच दिन का तप)- मुख्यनियोजिका साध्वी विश्रुतविभाजी, साध्वी उज्ज्वलरेखाजी, साध्वी पुण्यप्रभाजी, साध्वी चित्रलेखाजी, साध्वी धवलप्रभाजी।

चोला (चार दिन का तप)-साध्वी सुनन्दाश्रीजी, साध्वी गौरवप्रभाजी, साध्वी संकल्पप्रभाजी, साध्वी तरुण्यशाजी, साध्वी चारित्र्यशाजी।

तेला (तीन दिन की तप)-साध्वी तितिक्षाश्रीजी, साध्वी दर्शनप्रभाजी, साध्वी दर्शनविभाजी, साध्वी उदितयशाजी, साध्वी प्रसन्नप्रभाजी, साध्वी मंजुलाश्रीजी, साध्वी नन्दिताश्रीजी।

बेला (दो दिन की तप)-साध्वी कमलश्रीजी, साध्वी मधुरयशाजी, साध्वी शुभ्रयशाजी, साध्वी श्वेतप्रभाजी, साध्वी मनोज्ञयशाजी, साध्वी रतिप्रभाजी।

उपवास -साध्वी अकलकंवरजी, साध्वी कमलप्रभाजी, साध्वी कलाप्रभाजी, साध्वी योगप्रभाजी, साध्वी निर्मलप्रभाजी।

नोट:- इनमें से अनेक साध्वियां अपने तप अनुष्ठान को वृद्धिंगत बनाए हुए हैं।

आचार्य तुलसी जन्मशताब्दी समारोह : निर्धारित परियोजनाएं-३

- गुरुकुलवास और बहिर्विहार में प्रत्येक माह की शुक्ला द्वितीया अथवा उसके निकटवर्ती किसी उपयुक्त दिन अणुव्रत के संदर्भ में कार्यक्रम और संगोष्ठी आयोजित हो। संगोष्ठी के विषय और उनकी तिथियां क्रमशः इस प्रकार हैं--

विषय

१. जरूरी है जीवन मूल्यों की प्रतिष्ठा
२. अणुव्रत : एक मानवीय आचार संहिता
३. सम्प्रदायमुक्त धर्म अणुव्रत
४. वर्तमान राष्ट्रीय परिदृश्य में अणुव्रत
५. राष्ट्रीय समस्याएं : समाधायक अणुव्रत
६. साम्प्रदायिक सद्भाव और अणुव्रत
७. भ्रष्टाचार उन्मूलन का सूत्र अणुव्रत
८. नशामुक्त हो जीवन
९. अणुव्रत जीवनशैली
१०. नैतिक शक्तियों का समीकरण
११. स्वस्थ समाज संरचना के सूत्र

तिथि

- मृगशिर शुक्ला द्वितीया
पौष शुक्ला द्वितीया
माघ शुक्ला द्वितीया
फाल्गुन शुक्ला द्वितीया
चैत्र शुक्ला द्वितीया
वैशाख शुक्ला द्वितीया
ज्येष्ठ शुक्ला द्वितीया
आषाढ़ शुक्ला द्वितीया
श्रावण शुक्ला द्वितीया
भाद्रपद शुक्ला द्वितीया
आश्विन शुक्ला द्वितीया

- दिल्ली में चतुर्मास प्रवास के दौरान प्रत्येक माह में दो अथवा तीन अणुव्रत विचार संगोष्ठियां आयोजित हों।
- अणुव्रत के कार्य हेतु सौ अणुव्रत प्रचेता तैयार करने का प्रयत्न किया जाए। इस हेतु प्रशिक्षण पाठ्यक्रम के निर्धारण के पश्चात प्रशिक्षण शिविर आयोजित हों। पूर्व प्रशिक्षित कार्यकर्ताओं को भी पुनः प्रशिक्षण दिया जाए। इस कार्य का दायित्व आचार्य तुलसी जन्मशताब्दी समारोह समिति का रहे।
- सन् २०१४ के दिल्ली प्रवास के दौरान आचार्य तुलसी जन्मशताब्दी समारोह समिति द्वारा अणुव्रत से संबद्ध इण्टरनेशनल कान्फ्रेंस का आयोजन हो।

जसोल से टापरा तक पूज्यप्रवर का संभावित यात्रा पथ

१ दिसम्बर	तिलवाड़ा	१८ दिसम्बर	शहर
२ दिसम्बर	बागुंडी	१९ दिसम्बर	खीपर
३ दिसम्बर	खारापार	२० दिसम्बर	झाक
४ दिसम्बर	सणतरा	२१ दिसम्बर	बाटाडू
५ दिसम्बर	उत्तरणी	२२ दिसम्बर	भीमड़ा
६ दिसम्बर	गीडा	२३ दिसम्बर	हुण्डो की ढाणी
७ दिसम्बर	सोहड़ा	२४ दिसम्बर	छीत्तर
८ दिसम्बर	हीरा की ढाणी	२५ दिसम्बर	कवास
९-१२ दिसम्बर	फलसूंड	२६ दिसम्बर	उत्तरलाई
१३ दिसम्बर	पारासर	२७ दिस.से १ जन.	बाडमेर
१४ दिसम्बर	कसुम्बला	२ जनवरी	उत्तरलाई
१५ दिसम्बर	लालू सियाड़ की ढाणी	३ जनवरी	कवास
१६ दिसम्बर	सवाऊ पदमसिंह	४ जनवरी	भगाणियों की ढाणी
१७ दिसम्बर	कानोड़	५-१० जन.	बायतू

११ जनवरी	माधासर	१५-१६ जन.	बालोतरा
१२ जनवरी	दूधवा मल्लीनाथ	१७ जनवरी	सिवांची मालाणी भवन
१३ जनवरी	बागुण्डी	१८-३१ जनवरी	असाढ़ा
१४ जनवरी	खेड़	१-१७ फरवरी	टापरा

नोट :- यात्रा पथ में अपेक्षानुसार परिवर्तन किया जा सकता है।

जैन विश्वभारती द्वारा पुरस्कारों की घोषणा

२८ जुलाई। परम पावन आचार्यवर की मंगल सन्निधि में प्रातःकालीन कार्यक्रम के दौरान जैविभा की ओर से उपमंत्रि श्री अरविन्द गोठी ने जैन विश्वभारती की पुरस्कार नियोजन उपसमिति द्वारा विभिन्न पुरस्कारों हेतु चयनित नामों की घोषणा की, जो इस प्रकार हैं--

पुरस्कार	वर्ष	नाम
१. जैन आगम मनीषा पुरस्कार	२०११	प्रो.अनुपम जैन, इन्दोर
२. गंगादेवी सरावगी जैनविद्या पुरस्कार	२०११	श्रीमती कुसुम जैन
३. आचार्य महाप्रज्ञ अहिंसा प्रशिक्षण सम्मान	२०१२	अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र, रीछेड़-हैदराबाद
४. आचार्य तुलसी प्राकृत पुरस्कार	२०११	कुन्दकुन्द भारती, दिल्ली
५. प्रज्ञा पुरस्कार	२०११	डा.एस.आर.मेहता, जयपुर
६. आचार्य महाप्रज्ञ साहित्य पुरस्कार	२०११	श्री गोविन्द व्यास
७. जीवन विज्ञान पुरस्कार	२०११	जीवन विज्ञान अकादमी, जलगांव
८. जय तुलसी विद्या पुरस्कार	२०११	गणाधिपति तुलसी जैन इंजीनियरिंग कालेज, वेल्लूर (तमिलनाडु)

आदर्श साहित्य संघ को भेंट

११,१११/- स्व. श्री धनराजजी नाहर (जाणुंदा-बेंगलुरु) की पुण्यस्मृति में मदनराज, हेमन्तकुमार, दिनेशकुमार, राकेशकुमार, महेन्द्र, अक्षय, रौनक, चिराग एवं समस्त नाहर परिवार द्वारा प्रदत्त।

२१००/- श्रद्धानिष्ठ श्रावक स्व.पन्नालालजी जैन की दसवीं पुण्यतिथि पर उनके सुपुत्र रमेशचन्द जैन, ओबरा (उ.प्र.) एवं सुभाषचन्द जैन, दिल्ली द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्व. श्री बाबूलालजी भटेवरा (चिताम्बा-सूरत) की पुण्यस्मृति में उनकी धर्मपत्नी श्रीमती प्रमिलादेवी, सुपुत्र व पूत्रवधू कमलेशकुमार-श्रुति, पंकजकुमार-मनीषा, सुनीलकुमार-रश्मि, सुपुत्र झील व वीर भटेवरा द्वारा प्रदत्त।

२१००/- वाव पथक महिला मंडल, सूरत द्वारा जसोल में पूज्यप्रवर की दसदिवसीय उपासना के उपलक्ष्य में जैन श्वेताम्बर तेरापंथ महिला मंडल, सूरत द्वारा प्रदत्त।

पत्र व्यवहार के लिए हमारा पता—

केशवप्रसाद चतुर्वेदी, प्रबन्धक-आदर्श साहित्य संघ, द्वारा-आचार्य महाश्रमण प्रवास व्यवस्था समिति,

पो. जसोल-३४४०२४ जि. बाड़मेर (राजस्थान) फोन : ६६८००५५३८१, ६३५२४०४६४१

दिल्ली कार्यालय का फोन ०११-२३२३४६४१ Email : adarshsahityasangh@yahoo.com

प्रकाशन दिनांक : ११-८-२०१२

